



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

**The Savera Times**

दिनांक

03.03.2024

पृष्ठ संख्या

--

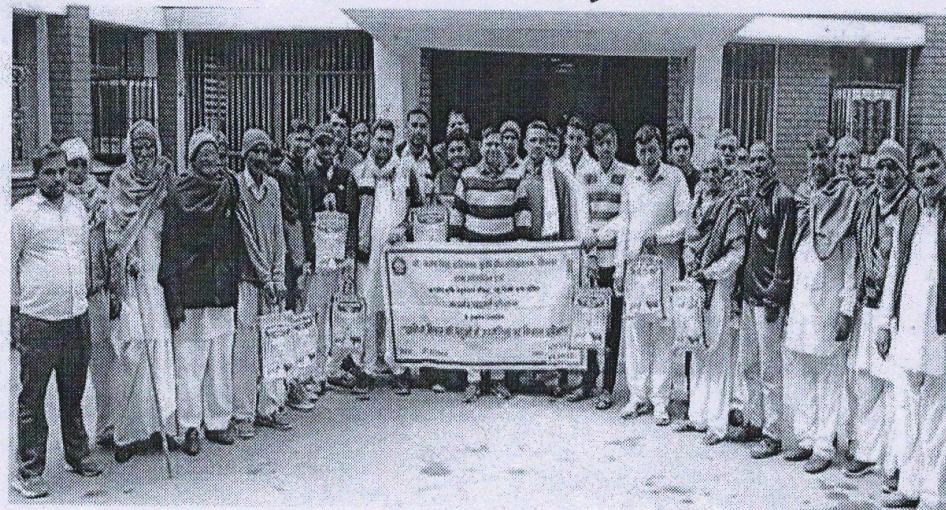
कॉलम

--

## CSSHAU conducted Training program on Utility of mineral mixture in animal feed

@TheSaveraTimes  
Network.

**Hisar:** Under the Farmer First Program running under the Directorate of Extension Education of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, a one-day training program was organized for the farmers on the topic "Utility of mineral mixture in animal feed". Farmers from Payal and Chirod villages of Hisar district participated in this program. Dr. Ashok Godara, principal investigator of the Farmer First Program, said that the main objective of this program is to provide information to the animal farmers about maintaining the health of the animals and



increasing milk production so that the income of the farmers can be increased. Farmer First Program (FFP) is an initiative of ICAR to give importance to the complex, diverse and risky realities of smallholder agriculture and

majority of farmers by enhancing farmer-scientist interface, besides enhancing production and productivity. He said that under this programme, special emphasis is given on production management in

agriculture including resource management, climate resilient agriculture, storage, market, supply chain, value chain, innovation, information system etc. In the program, animal nutrition scientist Dr. Sajjan Sihag

advised to feed balanced diet to the animals as per their condition, which includes green fodder, dry fodder, bran and mineral mixture. He said that due to lack of mineral mixture inside the animal, the animal does not have stiffness and does not produce new milk, the animal drinks urine, licks the wall, eats clothes, cow dung and soil.

Therefore, keep giving mineral mixture to the animals daily throughout the year, it will be very beneficial for the animals. Dr. Satpal, agronomist of the fodder section, gave information about crop cycles to provide green fodder throughout the year for the production of green fodder and good health of animals.



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक महान् २	३-३-२५	५	७-४

## पशुओं के आहार संबंधित विषय पर करवाया प्रशिक्षण कार्यक्रम



हकुमि में पशु आहार के लिए आयोजित प्रशिक्षण में उपस्थित किसान

भारत न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए 'पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिसार जिले के गांव पायल वं चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया। फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है ताकि किसानों की आमदनी बढ़ाई जा सके। फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम एफएफपी के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है। उन्होंने बताया इस प्रोग्राम के अंतर्गत कृषि में संसाधन प्रबंधन, जलवायु लंबीली कृषि, भंडारण,

बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूचना प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जाता है। कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. सज्जन सिंहाग ने पशुओं को उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सूखा चारा, चोकर व मिनरल मिक्सचर खिलाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि पशु के अंदर खनिज मिश्रण की कमी के कारण पशु जकड़ने व नए दूध नहीं होता, पशु मूत्र पीते हैं, दीवार चाटते हैं, कपड़ा, गाभा व मिट्टी खाते हैं। चारा अनुभाग के सम्बन्ध वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा-चारा उपलब्ध करवाने हेतु फसल चक्रों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कम खर्च पर अधिक दूध उत्पादन के लिए जरूरी है कि पशुओं को पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा चारा पूर्ण वर्ष मिलता रहे। वर्ष के कुछ माह में जैसे अक्तूबर-नवंबर व मई-जून में हरे चारे की कमी आ जाने के कारण हम पशुओं को हरा चारा पूर्ण मात्रा में नहीं दे पाते हैं, जिसके परस्पर पशुओं का स्वास्थ्य खराब हो जाता है एवं दूध उत्पादन में कमी आ जाती है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब के सरी	३.३.२५	२	२-५



## हकृति में पशुओं के आहार संबंधित विषय पर करवाया प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिसार, 2 मार्च (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फस्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए "पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम

में हिसार जिले के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया।

फार्मर फस्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि, इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है, ताकि किसानों की आमदानी बढ़ाई जा सके। फार्मर फस्ट

प्रोग्राम (एफ.एफ.पी.) के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आई.सी.ए.आर. की एक पहल है।

उन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम के

अंतर्गत कृषि में संसाधन प्रबंधन, जलवायु लचीली कृषि, भंडारण, बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूचना प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जाता है। इस अवसर पर पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. एच.एस. सहरण व एस.आर.एफ. डॉ. बिटू राम भी मौजूद रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैर्घ्य मूल्य	३.३.२५	१३	२-६

हकृति में पशुपालकों को पशुओं के आहार पर दिया गया प्रशिक्षण

## पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण का इस्तेमाल जरूरी

हरियाणा न्यूज ► हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फस्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिसार जिले के गंव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया। फार्मर फस्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के



हिसार। हकृति में आयोजित प्रशिक्षण में मौजूद वैज्ञानिक व पशुपालक।

स्वास्थ्य बनाए रखने व दुध उत्पादन किसानों की आमदनी बढ़ाई जा सकें। बढ़ाने की जानकारी देना है ताकि फार्मर फस्ट प्रोग्राम (एफएफपी) के

### ये रहे गोजूद

कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. सज्जन सिंहाग ने पशुओं को उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सूखा चारा, चौकर व मिनरल मिक्सदर खिलाने की सलाह दी। चारा अनुभाग के सभ्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा-चारा उपलब्ध करवाने के लिए फसल चकों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. एच.एस. सहरण व एसआरएफ डॉ. बिट्टू राम भी मौजूद रहे।

तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है।

उन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम के अंतर्गत कृषि में संसाधन प्रबंधन, जलवायु लचीली कृषि, भंडारण, बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूचना प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जाता है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभ्यु उत्ताला	३१-३-२४	२	१-५

प्रशिक्षण

एचएयू में किसानों के लिए पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता विषय पर हुआ कार्यक्रम

## ‘मिनरल मिक्सचर को पशु चारे में करें शामिल’

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किसानों के लिए ‘पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता’ विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें जिले के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. सज्जन सिहाग ने पशुओं को उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सूखा चारा, चोकर व मिनरल मिक्सचर खिलाने की सलाह दी।

उन्होंने कहा कि पशु के अंदर खनिज मिश्रण की कमी के कारण पशु जकड़न व दूध नहीं होता, पशु मूत्र पीते हैं, दीवार चाटते हैं, कपड़ा, गाभा व मिट्टी खाते हैं।



एचएयू में आयोजित प्रशिक्षण में मौजूद वैज्ञानिक व पशुपालक। संवाद

इसलिए पशुओं को खनिज मिश्रण सारा साल रोजाना देते रहें इससे पशु को बहुत ही फायदा होगा।

फार्मर फस्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों

को पशुओं का स्वास्थ्य बनाए रखने व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है ताकि किसानों की आमदनी बढ़ाई जा सके।

प्रोग्राम के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-

वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है।

चारा अनुभाग के सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा-चारा उपलब्ध करवाने के लिए फसल चक्रों के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम के अंत में पशुपालकों को पशु स्वास्थ्य सुधार के लिए मिनरल मिक्सचर के 5-5 किलोग्राम के पैकेट महत्वपूर्ण इनपुट के तौर पर निशुल्क वितरित किए गए। इस अवसर पर पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. एचएस सहारण व एसआरएफ डॉ. बिट्टू राम भी मौजूद रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

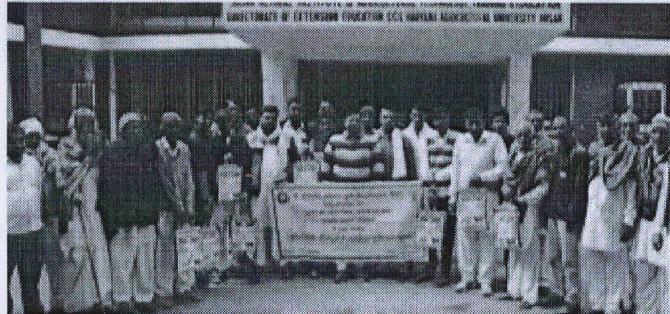
समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	02.03.2024	--	--

## हकृति में पशुओं के आहार संबंधित विषय पर करवाया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिसार के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बिस्तार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फस्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए 'पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिसार जिले के गांव पायल व चिड़ोद के किसानों ने भाग लिया।

फार्मर फस्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्येक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है ताकि किसानों की आमदानी बढ़ाई जा सके। फार्मर फस्ट प्रोग्राम (एफएफपी) के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जोखिम वाली



वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईटीएआर की एक पहल है। उन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम के अंतर्गत कृषि में संसाधन प्रबंधन, जलवायु लंबीली कृषि, भंडारण, बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूचना प्रणाली आदि महित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जाता है।

कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. सज्जन सिंहग ने पशुओं को उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सुखा चारा, चोकर व मिनरल मिक्सचर खिलाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि पशु के

अंदर खनिज मिश्रण की कमी के कारण पशु जकड़न व नए दूध नहीं होता, पशु मूत्र पीते हैं, दीवार चाटते हैं, कपड़ा, गाभा व मिट्टी खाते हैं। इसलिए पशुओं को खनिज मिश्रण सारा साल रोजाना देते रहें इससे पशु को बहुत ही फायदा होगा।

चारा अनुभाग के स्वयं वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा-चारा उपलब्ध करवाने हेतु फसल चक्रों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कम खर्च पर अधिक दूध उत्पादन के लिए जरूरी है कि पशुओं को

पौष्टिक व संतुलित मात्रा में हरा चारा पूर्ण वर्ष मिलता रहे। वर्ष के कुछ माह में जैसे अक्टूबर-नवंबर व मई-जून में हरे चारे की कमी आ जाने के कारण हम पशुओं को हरा चारा पूर्ण मात्रा में नहीं दे पाते हैं, जिसके परस्पर स्वरूप पशुओं का स्वास्थ्य खराब हो जाता है एवं दूध उत्पादन में कमी आ जाती है।

उन्होंने बताया कि मई-जून माह में हरे चारे की कमी न हो इसके लिए पशुपालक मार्च माह में ही ज्वार, मक्का, लोबिया आदि फसलों की विजाई कर सकते हैं।

मार्च माह में अनेक कटाई देने वाली ज्वार की किस्म जैसे एस.एस. जी 59-3 व सीएसवी 33 एमएफ (अनंत) व सीएसएच 24 एमएफ की विजाई कर सकते हैं, जिससे चार से पाँच कटाईयों में नवंबर तक हरा चारा मिलता रहेगा। इस अवसर पर पौधे रोग विशेषज्ञ डॉ. एच.एस. सहारण व एसआरएफ डॉ. बिंदु राम भी मौजूद रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स न्यूज	02.03.2024	--	--

## हकूमि में पशुओं के आहार संबंधित विषय पर करवाया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फस्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए "पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिसार ज़िले के गांव पायल व चिंडूद के किसानों ने भाग लिया।

फार्मर फस्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुध उत्पादन बढ़ाने की आनंदारी देना है ताकि किसानों की आमदानी बढ़ाई जा सके। फार्मर फस्ट प्रोग्राम (एफएफपी) के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफेस को बढ़ाकर छोटे किसानों की कृषि और अधिकांश किसानों की जटिल, विविध और जीवित वाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है। उन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम के अंतर्गत कृषि में संसाधन प्रबंधन, जलवाया लचीली कृषि, भेड़ारण, बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूखना प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जाता है। कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. मनजन मिहांग ने पशुओं को



उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सुखा चारा, चोकर व मिनरल मिक्सरचर खिलाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि पशु के अंदर खनिज मिश्रण की कमी के कारण पशु जकड़ने व नए दूध नहीं होता, पशु मूत्र पोते हैं, दीवार चाटते हैं, कपड़ा, गांधा व मिट्टी खाते हैं। इसलिए पशुओं को खनिज मिश्रण सारा साल रोजाना देने यह इससे पशु को बहुत ही फायदा होता है।

चारा अनुभाव के सम्बन्धीय वैज्ञानिक डॉ. मनजन ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा-चारा उत्पादन करते हुए फसल चर्चों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कम खर्च पर अधिक दूध उत्पादन के लिए जरूरी है कि पशुओं को पौधिक व संतुलित माला में हरा चारा पूर्ण वर्ष मिलता रहे। वर्ष के कुछ माह में जैसे अकूवर-नवंवर व मई-जून में हरे चारे की कमी आ जाने के कारण हम पशुओं को हरा चारा पूर्ण माला में नहीं दे पाते हैं, जिसके फलस्वरूप पशुओं का स्वास्थ्य

खराब हो जाता है एवं दूध उत्पादन में कमी आ जाती है।

उन्होंने बताया कि मई-जून माह में हरे चारे की कमी न हो इसके लिए पशुपालक मार्च माह में ही ज्वार, मक्का, सौंविया आदि फसलों की बिजाई कर सकते हैं। मार्च माह में अनेक कटाई देने वाली ज्वार की बिस्म जैसे एम.एम. डी 59-3 व सीएमली 33 एमएफ (अनंत) व सीएमएच 24 एमएफ की बिजाई कर सकते हैं, जिससे चार से पांच कटाईयों में नवंवर तक हरा चारा मिलता रहेगा। कार्यक्रम के अंत में पशुपालकों को पशु स्वास्थ्य सुधार के लिए मिनरल मिक्सरचर के 5-5 किलोग्राम के पैकेट महत्वपूर्ण इनपुट के तौर पर निश्चिक वितरित किए गए। इस अवसर पर पींघ रीग विशेषज्ञ डॉ. एच.एम. सहारण व एसआरएफ डॉ. विद्युत राम भी मौजूद रहे।

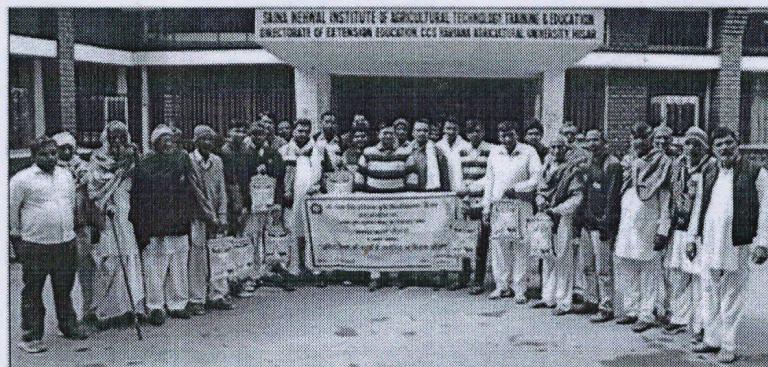


# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	02.03.2024	--	--

हकूमि में पशुओं के आहार संबंधित विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का किया आयोजन

पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य : डॉ. गोदारा



पांच बजे व्यूग

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशनालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फस्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए "पशुओं के आहार में खनिज मिश्रण की उपयोगिता" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिसार जिले के गाँव पालन व चिकित्स के किसानों ने भाग लिया।

फार्मर फस्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अंशुक गोदारा ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों के स्वास्थ्य बनाए रखने व दुध उत्पादन बढ़ाने की जानकारी देना है ताकि किसानों की आमदनी बढ़ाइ जा सके। फार्मर फस्ट प्रोग्राम (एफएफपी) के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफ़ेस का बढ़ावा छोटे किसानों की कृषि और अधिकार किसानों की जटिल, विविध और जोखिम बालं वासाविकताओं को महसू देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है। उन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम

के अंतर्गत कृषि में संसाधन प्रबोधन, जलवाया लचीली कृषि, भूद्वारण, बाजार, आपूर्ति श्रृंखला, मूल्य श्रृंखला, नवाचार, सूचना प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रक्रिया पर विशेष जार दिया जाता है।

कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक डॉ. सत्यन सिंहांग ने पशुओं को उनकी अवस्था के अनुसार संतुलित आहार, जिसमें हरा चारा, सुखा चारा, चोकर व मिनरल विक्रमर खिलान की सलाह दी। उन्होंने कहा कि पशु के अंदर खनिज मिश्रण की कमी के कारण पशु जड़दून व नए दुध नहीं होता, पशु भूत पीत है, दीवार चाटते हैं, कपड़ा, गांभा व मिर्टुल खतत है।

इसलिए पशुओं को खनिज मिश्रण सारा साल रोजाना देते रहें इससे पशु को बहुत ही काफ़ी होगा। चारा अनुभाग के अंत में वैज्ञानिक डॉ. सत्यन ने हरा चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष भर हरा चारा उत्पादन व पशुओं के संबंधित कारबाहों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कम खर्च पर अधिक दृश्य उत्पादन के लिए जरूरी है कि पशुओं को पीटिक व संतुलित

मात्रा में हरा चारा पूर्ण वर्ष मिलता रहे। वर्ष के कुछ माह में जैसे अनुच्छेद-नवीकरण व मई-जून में हरे चारों की कमी आ जाती के कारण हम पशुओं को हरा चारा पूर्ण मात्रा में नहीं दे पाते हैं, जिसके कारण दृश्य पशुओं का स्वास्थ्य खतत हो जाता है एवं दुध उत्पादन में कमी आ जाती है।

उन्होंने बताया कि मई-जून माह में हरे चारे की कमी न हो इसके लिए पशुपालक मार्च माह में ही ज्यादा, मक्का, लालिया आदि फलस्वरूप पशुओं का स्वास्थ्य खतत हो जाता है एवं दुध उत्पादन में कमी आ जाती है। उन्होंने कहा कि मई-जून माह में अनेक कटाई देने वाली ज्यादा की किस्म जैसे एस.एस.जी 59-3 व सीएसवी 33 एमएफ (अन) व सीएसएच 24 एमएफ की विजाई कर सकते हैं, जिससे चार से पांच कटाईओं में नवीकरण तक हरा चारा मिलता रहेगा। कार्यक्रम के अंत में पशुपालकों को पशु स्वास्थ्य सुधार के लिए मिनरल विक्रमर के 5-5 विलोग्राम के ऐकेट महत्वपूर्ण इनपैट के तौर पर निश्चिक विवरित किये गए। इस अवसर पर पौष रोग विशेषज्ञ डॉ. एच.एस. सहायण व एसआएफ डॉ. बिट्टू राम भी मौजूद रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	02.03.2024	--	--

## हक्किवि में पशुओं के आहार संबंधित विषय पर करवाया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम

### समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 2 मार्च। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत चल रहे फार्मर फस्ट प्रोग्राम के तहत किसानों के लिए "पशुओं के आहार में खनिज पिण्डण की उपयोगिता" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में दिवार तिले के गांव पायल व चिह्नित के किसानों ने भाग लिया। फार्मर फस्ट प्रोग्राम के प्रमुख अन्योदयक ई. अरोड़ गोदाया ने कहाया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने व दूध उत्पादन बढ़ाने को जानकारी देना है ताकि किसानों को आमदानी बढ़ाई जा सकें। फार्मर फस्ट प्रोग्राम (एफएफपी) के तहत उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, किसान-वैज्ञानिक इंटरफ़ेस को बढ़ावा देने की क्षमता की दृष्टि और अधिकारी किसानों की जटिल, विविध और जोखिम खाली वास्तविकताओं को महत्व देने के लिए आईसीएआर की एक पहल है।



खंडायन प्रक्रिया, जलवायु संबंधी दृष्टि, घंडालण, के कारण पशु गडड़ व नए दूध नहीं होता, पशु मृत जागर, आपूर्ति शुद्धिता, मूल्य शुद्धिता, नवाचार, पौसे हैं, दीचार चाटते हैं, कफड़ा, गांधा व मिट्टी खाते हैं यूनिटा प्रणाली आदि सहित उत्पादन प्रबंधन पर विशेष हैं। इसलिए पशुओं को खनिज पिण्डण सारा साल पांच कठाईयों में नवंवर तक ह्य चारा मिलता रहेगा। और दिया जाता है। कार्यक्रम में पशु पोषण वैज्ञानिक रोजाना देवी देवी इससे पशु को बहुत ही फायदा होगा। ई. सन्तन मिहान ने पशुओं को उनकी अवस्था के चार अनुभाव के सत्त्व वैज्ञानिक ई. सहायता ने ह्य सुधार के लिए मिनरल मिक्सचर के 5-5 किलोग्राम अनुसार संतुलित आहार, जिसमें ह्या चारा, सुखा चारा, चारा उत्पादन व पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए वर्ष के पैकेट नियुक्त वित्तिया किए गए। इस अवसर पर चोहर व मिनरल मिक्सचर खिलाने की मालाह दी। भर ह्या-चारा उत्पादन करवाने हेतु फसल चारों के पौधे गोपनीय हैं। एच.एस. सहायता व एसआरएफ उद्देश्य कहा कि पशु के अंदर खनिज पिण्डण को कमी बारे में जानकारी ही। उद्देश्य कहाया कि कम सुर्ख पर ई. चिन्ह गम भी पैशु है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभू उजाला	५. ३. २५	२	५-४

## मोतियों की खेती से किसान कमा सकते हैं लाखों रुपये

शिवानी सेहरा

हिसार। आधुनिक दौर में किसान कम लागत और स्मार्ट तरीके से खेती करने लगे हैं। किसान 2 से 3 साल पुराने मछली के तालाब में कृत्रिम मोतियों की खेती करके 12 से 18 महीने में 3 लाख रुपये तक कमा सकते हैं।

मोती की मांग घरेलू बाजार के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बाजार में हमेशा बढ़ी रहती है। किसान वैज्ञानिक विधि से और प्रशिक्षण लेकर अच्छी गुणवत्ता वाले मोती की खेती कर इसे बाजारों में बेचकर काफी मुनाफा कमा सकते हैं। मोती एवं अन्य जलीय खेती के लिए केंद्र और राज्य सरकार

कृत्रिम मोती तैयार कर 12 से 18 महीने में 3 लाख रुपये तक कमा सकते हैं किसान

सब्सडी भी दे रही हैं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि मोती की खेती की शुरुआत 1905 में जापान से हुई थी। भारत में मीठे जल वाले मछली के तालाबों और झीलों में मोती पालन के लिए इस्तेमाल होने वाली आम प्रजातियां हैं, लैमिलीडेन्स मार्जिनेलिस, लैमिलीडेन्स कोरिआनस और पेरेशिया कोर्सगाटा। एचएयू में स्थित मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय जो हरियाणा में अपनी तरह का पहला महाविद्यालय है और विभिन्न प्रकार की जलीय खेती के प्रशिक्षण देता रहता है, जिसमें मोती की खेती भी शामिल है। संवाद

सीप के शैल में कृत्रिम तरीके से नाभिक डालते हैं मोती एक प्राकृतिक रस है, जो सीप से पैदा होता है। प्राकृतिक वातावरण में सीप के शैल के अंदर बाहरी कणों के प्रवेश करने से मोती का निर्माण होता है, लेकिन कृत्रिम मोतियों की खेती मीठे पानी के तालाब में सीपों के शैल के अंदर कृत्रिम तरीके से नाभिक को डालकर कर सकते हैं। सीप के अंदर जिस डिजाइन का नाभिक डालते हैं उसी डिजाइन का मोती निकलता है।

“ सीपियों के सहारे किसान मोती उत्पादन कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। पहले सीपियों को घर पर बने छोटे तालाब या बड़े टैंकों में वातावरण अनुकूल डालने के लिए 10 दिन तक छोड़ा जाता है। इसके बाद उनमें न्यूक्लीयस डालकर एंटीबॉयटिक सोल्यूशन में रखा जाता है। सभी सीपों को 12-18 माह तक नायलान के बैग्स में तालाब में छोड़ा जाता है। 50 हजार रुपये से इसकी खेती शुरू कर सकते हैं। -डॉ. धर्मबीर मलिक, एसोसिएट प्रोफेसर, मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय